नोबेल पुरस्कार की कहानी

प्रवीण कुमार

10 दिसम्बर को ओस्लो और स्टॉकहोम में चुने हुए व्यक्तियों को प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार प्रदान किए गए। एक सदी से यह सिलसिला चल रहा है। चयन की किसी भी प्रक्रिया का असमान होना स्वाभाविक है और नोबेल पुरस्कार इसके अपवाद नहीं हैं, खास तौर पर शांति का नोबेल पुरस्कार। महात्मा गांधी को शांति का नोबेल नहीं मिल सका, वहीं एस. चन्द्रशेखर को भौतिकी नोबेल उनके युगांतरकारी पर्चे के 48 सालों बाद मिला।

कुल मिलाकर, नोबेल पुरस्कार ने विज्ञान के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है।

ओबामा का नोबेल

ओबामा को जब नोबेल मिलने की खबर लगी तो उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया, तब भी वे पुरस्कार लेने पहुंचे। आश्चर्य की बात तो यह है कि उन्हें अपने राष्ट्रपति कार्यकाल के 9 महीने के भीतर ही शांति के नोबेल के लिए नामित कर लिया गया। यह लोगों को जल्दबाज़ी भी लगी। वैसे और नोबेल पुरस्कारों से इतर शांति का नोबेल चल रहे कामों के लिए भी दिया जा सकता है किन्तु ओबामा का चयन तो इन कसौटियों पर भी खरा नहीं उतरता।

आंग सान सू की अवश्य ही अपने अदम्य साहस के बल पर दोबारा नोबेल की हकदार हैं मगर समस्या यह है कि एक व्यक्ति को एक ही क्षेत्र में एक बार ही नोबेल से नवाज़ा जा सकता है। मैरी क्यूरी को दो बार नोबेल मिला है पहले भौतिकी के क्षेत्र में और दूसरी बार रसायन के क्षेत्र में। उसी प्रकार लायनस पौलिंग को पहले रसायन के क्षेत्र में नोबेल मिलने के बाद शांति का नोबेल पुरस्कार भी मिला।

1936 में शांति के नोबेल से कार्ल फॉन ओसिट्ज़्की को नवाज़ा गया जो हिटलर का आलोचक था। ऐसे में हिटलर ने किसी भी जर्मन को नोबेल पुरस्कार लेने से रोकने के लिए एक फतवा निकाला था। वर्ष 2010 का शांति का नोबेल चाइनावासी लियू ज़िआओबो को मिला जो चीन सरकार से भिन्न मत रखते हैं। उन्हें और उनकी पत्नी को नज़रबंद रखा गया, लियू को पुरस्कार ग्रहण करने के लिए ओस्लो जाने की अनुमति भी नहीं मिली।

इसी साल नवंबर महीने में बीजिंग एयरपोर्ट अथॉरिटी द्वारा उन्हें लंदन के लिए उड़ान भरने से रोक दिया गया जबकि उन्होंने बताया कि ये एक सम्मेलन में हिस्सा लेने जा रहे हैं और 10 दिसंबर को ओस्लो में होने वाले नोबेल पुरस्कार वितरण समारोह में शिरकत करने का उनका कोई इरादा नहीं है।

अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी कैसे शांति के नोबेल से चूक गए जबकि वे इसके लिए 5 बार नामित और 3 बार शॉर्ट लिस्ट भी हुए। नामांकन के अंतिम चरण के कुछ दिन पहले ही जनवरी 1948 में गांधी जी की हत्या हो गई और अंततः उनका नाम हटा दिया गया। नोबेल कभी मरणोपरांत नहीं दिया जाता।

इसमें एक अपवाद हो सकता है अगर व्यक्ति की मृत्यु नामांकन और पुरस्कार समिति द्वारा चयनित होने के 2 महीने उपरांत हो जाए। और इस नियम से एक मात्र मरणोपरांत पुरस्कार प्राप्त व्यक्ति हैं राष्ट्र संघ महासचिव डैग हैमर्सकोल्ड जिनकी मृत्यु 1961 में एक विमान हादसे

में हो गई थी।

अल्फ्रेड नोबेल ने इस पुरस्कार की शुरुआत की थी और उन्हीं के नाम से यह पुरस्कार दिया भी जाता है। यह सुनिश्चित किया गया कि ये पुरस्कार 5 क्षेत्रों - भौतिकी, रसायन, चिकित्सा या शरीर क्रिया विज्ञान, शांति और साहित्य - के क्षेत्र में प्रति वर्ष उन लोगों को दिया जाएगा जिन्होंने पिछले वर्ष समाज के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया होगा। यह 'पिछला वर्ष' चयन समिति के लिए सबसे ज़्यादा मुश्किल मसला रहा है। चयन समिति ने 'पिछले वर्ष' की व्याख्या 'हाल ही के ऐसे काम' के रूप में की है, जिसका महत्त्व पिछले वर्षों में ही समझा गया हो।

प्रो. चन्द्रशेखर ने तारों की संरचना के सिद्धांत का अपना पर्चा 1935 में प्रकाशित किया था मगर भौतिकी का नोबेल उन्हें 1983 में मिल सका। इसका एक कारण तो खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी का लंबे समय तक भौतिकी की परिधि से बाहर रहना हो सकता है। खगोल शास्त्री एडिंगटन का चंद्रशेखर के विचारों से सहमत न होना दूसरे कारण के रूप में देखा जाता है। हालांकि चंद्रशेखर इस बात से खुश थे कि उन्हें नोबेल अन्य सभी पुरस्कारों के बाद में मिला। अन्यथा उनकी ज़िन्दगी किसी आर्मी जनरल जैसी हो जाती जो अपने सीने पर लगे सर्वोच्च पदक की ओर इशारा कर लोगों को समझाता रहता कि यह पदक तो मुझे गलती से मिल गया था और बाकी सब तो उसके असर से मिलते गए।

वर्ष 2010 का रसायन विज्ञान का नोबेल रिचर्ड हेक, ई-इची नेगिशी और अकीरा सुज़ुकी को 4 दशक पहले कार्बन परमाणुओं के युग्मन की तकनीक इजाद करने के लिए दिया गया।

पुरस्कार पाने वाले की योग्यता पर भी समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। पॉल हरमन को 1948 में उच्च क्षमता वाले डीडीटी के निर्माण के लिए चिकित्सा का नोबेल दिया गया था जो कीटों के लिए ज़हर था। इसके चलते वन्य जीवन पर उत्पन्न खतरे और साथ ही अंडे के आवरण के लगातार पतले होते जाने के कारण इसे 1972 में अमरीका ने और उसके बाद ज़्यादातर देशों ने प्रतिबंधित कर दिया।

ऐसा भी हुआ है कि बहुत से वैज्ञानिक अपना नाम नोबेल विजेताओं की सूची में पाकर अचंभित हुए हैं। पॉल नर्स जिन्हें 2001 का चिकित्सा नोबेल मिला उन्होंने नेचर पत्रिका को बताया था कि खबर सुनकर वे हक्का-बक्का रह गए थे। नर्स के साथ ही नोबेल बांटने वाले टिम हंट कहते हैं कि जब तक वेबसाइट पर उन्होंने अपना नाम नहीं देख लिया तब तक उन्हें यकीन ही नहीं हुआ था।

नोबेल विजेताओं की ज़िन्दगी बदल जाती है। अब उन्हें स्टार का दर्ज़ा मिल चुका होता है। ऐसे लोग जो पुरस्कार के पहले से ही मशहूर होते हैं, पुरस्कार से मिली अतिरिक्त शोहरत को संभाल लेते हैं। दूसरी ओर, कम प्रतिष्ठित विजेताओं को यह पुरस्कार कम उत्पादक बना देता है। लगातार कार्यक्रमों में भाग लेने और व्याख्यान देने के चलते उनके काम का बहुत नुकसान होता है। दो बार नोबेल प्राप्त कर चुकी मैरी क्यूरी ने कहा था कि लगता है शांति पाने के लिए ज़मीन में गड्ढा खोदकर रहना होगा। एक पुरस्कार विजेता ने एक प्रपत्र तैयार कर लिया था जिसमें उन्होंने व्याख्यान के निमंत्रण, मानद उपाधि प्राप्त करने के आग्रह और 'बीमारी के इलाज' के आग्रहों को ठुकराया था।

नोबेल विजेता शीघ्र ही अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र से बाहर निकलकर अन्य क्षेत्रों में भी विचार व्यक्त करने लगते हैं। मदर टेरेसा ने पुरस्कार के बाद ही जन्म नियंत्रण कार्यक्रम की निंदा करनी शुरू कर दी थी। पुरस्कार मिलते ही जनता का ध्यान विजेता की ओर आकर्षित होता है जो उसे अतिरिक्त ज़िम्मेदारी का एहसास कराता है और ज़्यादातर नोबेल विजेता इसे सहजता से वहन नहीं कर पाते।

विलियम शाकले को ट्रांज़िस्टर पर उनके काम के लिए 1956 में भौतिकी का नोबेल मिला जिससे इलेक्ट्रॉनिक युग की शुरुआत हुई थी। बाद के समय में उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण के नस्लीय सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार कर अपनी प्रतिष्ठा धूमिल कर ली थी। ये प्रयास उनके विषय क्षेत्र के बाहर थे।

जे. डी. वॉटसन को डीएनए की संरचना के लिए 1962 में शरीर क्रिया विज्ञान का नोबेल मिला। एक समाचार पत्र को दिए साक्षात्कार में वॉटसन ने नस्ल और विज्ञान पर

एक विस्फोटक बहस को छेड़ दिया था जिसमें उन्होंने दावा किया था कि "अफ्रीकी देशों के प्रति पश्चिम द्वारा अपनाई गई नीति इस गलत सोच पर आधारित थी कि ये काले लोग उतने ही बुद्धिमान हैं जितने कि गोरे लोग। जबकि शोध इससे इतर परिणाम दर्शाते हैं।" परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही दिनों बाद कोल्ड स्प्रिंग प्रयोगशाला, लांग आइलैण्ड, अमरीका के चांसलर के पद से उनकी छुट्टी कर दी गई। उन्होंने यह सिद्धांत दिया कि अफ्रीकी काले लोगों के शरीर में कामोत्तेजना/शारीरिक शक्ति ज़्यादा होती है साथ ही जिनेटिक इजीनियरिंग के पक्ष से तर्क देते हुए उन्होंने कहा कि इसके ज़रिए एक दिन अज्ञानता दूर की जा सकेगी। जबकि वास्तव में आई. क्यू. के लिए आपकी परवरिश और परिवेश ही अंतिम रूप से उत्तरदायी होते हैं। *साइंस* पत्रिका में 1990 में वॉटसन ने लिखा था कि ...जब भी वे पहले से तैयार वक्तव्य से हटते, उनके सहकर्मियों की सांस थम जाती थी।

नोबेल पुरस्कार मिलते ही पुरस्कार विजेताओं के सहकर्मियों से सम्बंध विचित्र हो जाते हैं। अब उनके विचार आसानी से स्वीकार होने लगते हैं। अमरीकी नोबेल विजेता अर्नो पेंजिअस कहते हैं कि मैं हमेशा ही लोगों से बातचीत करते समय डर जाता हूं क्योंकि लोग अच्छी बातचीत के अंत में कहते हैं कि आपसे मिलकर सम्मानित महसूस किया। 1968 में चिकित्सा के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित राबर्ट होले का मानना है कि "पहचान समय मांगती है और इस प्रकार से सफलता खुद को ही सीमित कर लेती है।"

राजनीतिक निहितार्थ

नोबेल पुरस्कार की स्थापना करने वाले अल्फ्रेड नोबेल ने कभी भी यह नहीं सोचा था कि विज्ञान के पुरस्कार के परोक्ष राजनीतिक असर होंगे। जैसे, आइंस्टाइन ने अन्य वैज्ञानिकों के साथ मिलकर अमरीकी राष्ट्रपति रुज़वेल्ट को पहले 1939 में और फिर 1940 में पत्र लिखकर नाज़ियों से पहले परमाणु बम बना लेने की आग्रह किया था।

विज्ञान नोबेल पुरस्कार का एक असर यह रहा है कि इसने विज्ञान के इतिहास को विकृत किया है।

पारितोषिक देने की परम्परा के चलते प्रसिद्ध कार्य को हमेशा ही लीक से हटकर किए गए मगर असफल कार्यों से ज़्यादा तवज्जो मिल जाती है। ऐसा लगता है कि यदि वॉटसन और क्रिक अपने डीएनए संरचना मॉडल को आगे न बढ़ाते तो शायद लायनस पौलिंग बाज़ी मार ले जाते; वे भी इसी समस्या पर काम कर रहे थे। पुरस्कार व्यक्ति के योगदान को महिमा मंडित करते हैं और उस पूरे ताने-बाने की उपेक्षा हो जाती है जिसके अंतर्गत वह योगदान हुआ था। शुरुआती सालों में तो पुरस्कार का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक था लेकिन बाद में यह उन क्षेत्रों में ही सिमट गया जिन पर ज़्यादा ज़ोर था जैसे आण्विक भौतिकी और परमाण्विक जीव विज्ञान।

नोबेल की श्रेष्ठता को बरकरार रखने के लिए पुरस्कार समिति ने एक पुरस्कार में तीन से ज़्यादा विजेताओं को न रखने का फैसला किया है। वास्तव में यह चौथे सहयोगी व्यक्ति को पुरस्कार से बाहर रखने का अनकहा तरीका भी है जबकि जानी-मानी बात है कि आज के दौर में वैज्ञानिक शोध सहयोग से ही होते हैं। हो सकता है जब मैक्स डेलब्रुक ने ये बात कही थी तो काफी सहज भाव में कही हो कि "कुछ मनमाने तरीकों से आप एक व्यक्ति को चुनते हैं और उसे एक मॉडल बना देते हैं।"

अर्थशास्त्र का नोबेल

अर्थशास्त्र के लिए नोबेल की शुरुआत स्वेरिजेस रिक्सबैंक की मदद से 1969 में की गई। इस पर मुख्य आपत्ति यह थी कि अर्थशास्त्र में ऐसा कुछ नहीं है कि उसे विज्ञान माना जाए।

रिक्सबैंक की मदद से पुरस्कार स्थापित करने और 1974 में पुरस्कार प्राप्त करने के बाद स्वयं गुनार मिर्डल ने यह स्वीकार किया था। दूसरी समस्या यह है कि पुरस्कार के चलते अर्थशास्त्र के अनुसंधान बाधित होते हैं क्योंकि यह अर्थशास्त्रियों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करता है। तीसरी आपत्ति यह है कि वास्तव में योग्य अर्थशास्त्री बहुत ही कम हैं। बहुत से पुरस्कार विजेताओं का मानना है कि यह पुरस्कार हटा दिया जाना चाहिए। अभी तक जिन 71

लोगों को इस पुरस्कार से नवाज़ा गया है उनमें से 49 अमरीकी हैं। ऐसे में कुछ लोग इसे 'शिकागो स्कूल अवार्ड' भी कहते हैं। इसके पीछे उनका इशारा शिकागो विश्वविद्यालय से जुड़े अर्थशास्त्रियों की संख्या है।

कैसे पाएं नोबेल पुरस्कार

आखिर कैसे हम नोबेल पुरस्कार के हकदार बन सकते हैं? मज़ाक में कहा जाता है कि इसके लिए 'एक नोबेल विजेता के छात्र बन जाइए।' एनरिको फर्मी 6 भावी नोबेल विजेताओं के शिक्षक रहे। नील्स बोहर के 4 विद्यार्थी - लैंडौ, डेलब्रुक, ब्लैक और एस. चंद्रशेखर - आगे चलकर नोबेल से सम्मानित हुए। खुद एमिल फिशर (1902 नोबेल) के अधीन अध्ययन कर चुके ओटो वारबर्ग भी चार नोबेल विजेताओं के गुरू रहे हैं। एमिल फिशर स्वयं 1904 के नोबेल विजेता एडोल्फ फान बेयर के शिष्य रहे थे। हैरिएट ज़ुकरमैन ने लिखा था कि नोबेल विजेता एक किस्म का समुदाय है जिसमें एक बौद्धिक जातिवाद-सा है। अपने अध्ययन में जिन 41 अमरीकी नोबेल विजेताओं का ज़ुकरमैन ने साक्षात्कार किया, उनमें से ज़्यादातर का मानना था कि नोबेल कमेटी ने जिन नामों की उपेक्षा की थी वे भी विजेता से कम काबिल न थे। वे दावा करती हैं कि नोबेल विजेताओं के बीच कुछ हद तक तो बौद्धिक जातिवाद अवश्य है, और यह स्वाभाविक भी है कि महान शिक्षक और पात्र विद्यार्थी एक-दूसरे को ढूंढ ही लेते हैं। 1972 तक तो इस गुरु-शिष्य परंपरा को आधे से अधिक अमरीकी नोबेल विजेता सही साबित कर चुके हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***